

अखण्ड सुहाग-सौभाग्य शतायु जीवन

कुल-वंश वृद्धि करवा शक्ति दीक्षा

भारतीय संस्कृति में कुछ पर्व केवल तिथि या परंपरा नहीं होते, बल्कि वे प्रेम, संकल्प, विश्वास और पारिवारिक मंगल के जीवंत प्रतीक होते हैं। करवा चौथ व्रत केवल शरीर का नहीं, संकल्प का भी होता है। कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाने वाला यह पर्व विशेष रूप से पति दीर्घायु, अखण्ड सुहाग-सौभाग्य, पति-पत्नी में प्रेम-सामंजस्य, मंगल, सम्मान और दांपत्य जीवन पूर्णता तथा परिवार की सुख-समृद्धि का प्रतीक है।

भारतीय परंपरा में नारी को है। इस दिन सुहागिन स्त्री मंगलसूत्र, सुहाग चिह्नों को धारण करती हैं। ये दांपत्य-सौभाग्य और प्रतीक हैं। सुश्रेष्ठ व प्रतिमान है कि उसके मन में प्रेम व्यवहार में सम्मान हो, परिवार जीवनसाथी के प्रति विश्वास वास्तविक सौभाग्य और

भारतीय परंपरा में धन या भौतिक सुख नहीं है। दांपत्य, संस्कारी संतान, परिवार और धर्ममय जीवन— ये सभी अर्थात् मिट्टी का पात्र या कलश, जो जीवन का आधार है। इसलिए करवा समृद्धि का ही रूप है। करवा चौथ में चंद्रमा परंपरा में चंद्रमा को शीतलता, मन, सौम्यता और

करवा में भरा जल जीवन का प्रतीक है, चंद्रमा शीतलता का, व्रत संकल्प का और सुहाग प्रेम की अखण्डता का प्रतीक है। चंद्रमा की शीतलता संदेश देती है कि दांपत्य जीवन में केवल प्रेम की अग्नि ही नहीं, प्रेम की शीतलता भी आवश्यक है। क्रोध के स्थान पर शांति, अहंकार के स्थान पर विनम्रता, अधिकार के स्थान पर विश्वास ही दांपत्य को दीर्घकालीन बनाते हैं।

ऋग्वेद में प्रसिद्ध प्रार्थना आती है—

जीवेमशरदः शतम्।

अर्थात्—हम सौ शरद् ऋतुओं तक जीवित रहें। उक्त दीक्षा इन्हीं असीम गुणों को प्राप्त करने का मार्ग है। यह दीक्षा ग्रहण करने के उपरांत धीरे-धीरे स्वतः ही पति-पत्नी दोनों एक-दूसरे का सम्मान करते हैं, दांपत्य जीवन प्रेममय बना रहता है, परिवार में सुख-शांति स्थापित रहती है, संतान आज्ञा पालक, सुसंस्कारी और स्वस्थ रहती है तथा गृहस्थ जीवन में प्रेम-सामंजस्य और मंगल से परिपूर्ण होते हैं।

इसीलिए करवा चौथ को अखण्ड सुहाग, सौभाग्य, संतान-सुख, कुल-वृद्धि और दीर्घ मंगलमय जीवन की सामूहिक शक्ति के रूप में देखा गया है। यदि सांसारिक गृहस्थ जीवन को श्रेष्ठमय स्वर्ग तुल्य बनाना है तो उपर्युक्त पथों पर गतिशील होना पड़ेगा। आसुरी प्रवृत्तियां तो यहां अधिकाधिक मात्रा में मिलेंगी ही। परन्तु उनसे जीवन को सुरक्षित और संयमित कर उन्हीं मार्गों पर साहस के साथ आगे बढ़ना होगा जिन मार्गों को आर्य संस्कृति में दर्शाया गया है। वहीं पर श्रेष्ठता, दिव्यता, प्रेम, माधुर्य, करुणा, सुखमय गृहस्थ जीवन का निर्माण हो सकता है।

अखण्ड सुहाग-सौभाग्य शतायु जीवन कुल-वंश वृद्धि करवा शक्ति दीक्षा न्यौछावर ₹1800